LOK SABHA

Thursday, March 31, 1960/Chaitra 11, 1882 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Non-Tibetan Refugees from Tibet

+

*1184 { **Shri Ram Krishan Gupta:**
Shri A. M. Tariq:
Shri Bhakt Darshan:

Will the **Prime Minister** be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 29 on the 16th November, 1959 and state:

(a) whether the investigation conducted regarding the identity and antecedents of the 40 non-Tibetans found amongst the refugees from Tibet has been completed; and

(b) if so, the result thereof?

The Prime Minister and Minister of External Affairs (Shri Jawaharlal Nehru): (a) and (b). Yes; about fifty persons have been identified as of Chinese origin.

Shri Ram Krishan Gupta: May I know whether any restrictions have been placed upon their movement; if so, the nature of those restrictions?

Shri Jawaharlal Nehru: Well, the first obvious restriction was that they were kept more or less in custody to know what they are. At present all these Tibetan refugees have been kept in camps, they do not normally wander about all over India. Some of these Chinese people are in Calcutta, I understand, but they have to keep in touch with us or we have to keep in touch with them. It is intended, so far as this particular lot is concerned, to gradually send them out of India.

श्री अ० मु० तारिक : मैं यह जानना चाहता हूं कि यह जो लोग पकड़े गये और उन से पूछताछ की गई तो क्या उस से हुकूमत का यह विचार हुआ कि कुछ लोग कुमिंतांग गवर्नमेंट का रिप्रेजेंट करते हैं और वहां के जासूस हैं ?

[شری اے - ایم - طارق : میں یہ جاننا چاہتا ہوں کہ یہ جو لوگ پکڑے گئے اور ان سے پوچھ تاچھ کی گئی تو کیا اس سے حکومت کا یہ وچار ہوا کہ کچھ لوگ کمنتانگ گورنمنٹ کو ریپریزنٹ کرتے ہیں اور وہاں کے جاسوس ہیں ؟]

श्री जवाहरलाल नेहरू: यह तो एक ऐसा मामला है कि मेरे लिए इन सवालों का जवाब देना मुनासिब नहीं मालूम होता। बहुत सी बातें मालूम हुईं, कहीं कहीं कुछ मालूम हुआ लेकिन अब एक दो टुकड़ों का जवाब दे दूं तो ठीक नहीं होगा।

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन् क्या इस बात का पता लगाया गया है कि आखिर इन लोगों का तिब्बतियों के साथ आने में उद्देश्य क्या था ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : यह वही सवाल हो गया। अब अलग अलग आदमियों के अलग अलग उद्देश्य होते हैं।

श्री छत्रराज सिंह : इन चीनियों को क्या तिब्बती शरणार्थियों से अब अलग कर दिया गया है और अलग कर दिया गया है तो यह कहां रक्खे जा रहे हैं और इन को हिन्दुस्तान से बाहर भेजने की जैसे कि प्रधान मंत्री महोदय

ने कहा एक योजना है तो मैं जानना चाहता हूं कि इन को कब तक बाहर भेज दिया जायगा?

श्री जवाहरलाल नेहरू : मुझे ठीक मालूम नहीं लेकिन मेरे ख्याल से उसी इलाके में कहीं अलग रक्खे गये थे। इन में से एक, आध जैसे मैंने कहा वहां से भाग गये थे और पकड़े गये, पकड़े जाने से मेरा मतलब कोई गिरफ्तार करके रखने से नहीं था लेकिन उनके बारे में यह मालूम हो गया था कि वे भाग कर कलकत्ते में आ गये हैं और गवर्नमेंट उन पर नजर रखती रही और देखती रही कि वे वहां पर क्या करते रहे है। अब वे कब भेजे जायेंगे यह मैं नहीं कह सकता, कोई खास तारीख तो मुकर्रर नहीं है लेकिन जब कोई माकूल इन्तजाम हो जायगा और आसानी से उनको भेजा जा सकेगा तो वे भेज दिये जायेंगे।

डा० राम सुभग सिंह : क्या यह पचासों चीनी तिब्बत से ही हिन्दुस्तान आये थे और यदि हां तो उन लोगों को फर्स्ट चैक पोस्ट पर नोटिस किया गया था या नहीं ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : मैं ठीक से समझा नहीं।

Dr. Ram Subhag Singh: May I know whether all these 50 Chinese entered India from Tibet; if so, whether they were first noticed at the first Indian check-post or not?

श्री जवाहरलाल नेहरू : यह तो सब जैसे तिब्बत के शरणार्थी आ रहे थे उन्हीं गोलों में आये और अलग अलग आये। उसी रास्ते से और उसी सिलसिले में आये। बाद में जांच पड़ताल हुई तो यह पाया गया कि तिब्बती लोग नहीं हैं और उस के बाद उन से बातचीत वगैरह हुई।

श्री अ० मु० तारिक : मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या हुकूमत को इस बात का इल्म है कि हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ शहरों में बहुत से लोग जो कि असल में तिब्बती नहीं हैं लेकिन चूंकि उनकी शक्ल तिब्बती लोगों से मिलती जुलती है इस वास्ते वे तिब्बती रेफ्यूजीज में मिल जाते हैं और अगर यह दुरुस्त है तो गवर्नमेंट ने इसके लिए क्या एक्शन लिया है ?

[شری اے - ایم طارق : میں یہ جاننا چاہتا ہوں کہ کیا حکومت کو اس بات کا علم ہے کہ ہندوستان کے مختلف شہروں میں بہت سے لوگ جو کہ اصل میں تبتی نہیں ہیں لیکن چونکہ ان کی شکل تبتی لوگوں سے ملتی جلتی ہے اس واسطے وہ تبتی ریفیوجیز میں مل جاتے ہیں اور اگر یہ درست ہے تو گورنمنٹ نے اس کے لئے کیا ایکشن لیا ہے ؟]

श्री जवाहरलाल नेहरू : जहां तक शक्ल मिलने का ताल्लुक है तो वह तो हिन्दुस्तान की सरहद पर जांय तो बहुत से लोग ऐसे वहां पर रहते हैं जिनकी शक्ल उनसे मिलती है खासकर काश्मीर में ऐसे लोग मिलते हैं।

Shri Brajeswar Prasad: May I know whether these Chinese want to go back to China or not?

श्री जवाहरलाल नेहरू : अब यह तो अलग अलग राय होंगी लेकिन जाहिर है कि जहां से वे आये हैं वहां वे नहीं जाना चाहते हैं।

Shri Hem Barua: In view of this particular incident and in view of the fact that Tibetan refugees or refugees from Tibet are pouring in almost every day, particularly at Misamari, may I know whether the Government have adopted any stringent measures to screen them off?

Shri Jawaharlal Nehru: There have always been measures to screen the refugees. Originally when they came in very large numbers this had to be done, and subsequently it was done. Now the numbers are not so many; they do come, struggle in, and they are screened.

Shri Brajeswar Prasad: Is it the policy of the Government of India to send back these Chinese against their wishes?

Shri Jawaharlal Nehru: I am afraid, I cannot give a very definite answer, because if they do not carry out our directions it is open to us to send them at least outside India—where I do not know. We cannot have people coming in here and insisting on staying here.

Shri Ram Krishan Gupta: The hon. Prime Minister just now stated that these refugees had been kept in camps. May I know whether these non-Tibetan refugees have been kept with Tibetan refugees or separately?

Shri Jawaharlal Nehru: I have already answered that.

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, मैं यह जानना चाहता हूं कि इन चीनियों को चीन वापिस भेजने के बारे में क्या चीन सरकार से कोई पत्र व्यवहार किया गया है और यदि किया गया है, तो चीन सरकार से उस बारे में क्या उत्तर प्राप्त हुआ है ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : जी नहीं। हमें तो दिलचस्पी इस बात में है कि वे हिन्दुस्तान के बाहर जांय लेकिन कहां जांय यह उनकी खुशी है।

Loomage of Indian Jute Mills Association

\+
*1185. **Shri S. C. Samanta:**
Shri Subodh Hansda:
Shri Aurobindo Ghosal:

Will the **Minister of Commerce and Industry** be pleased to state:

(a) what percentage of loomage of Indian Jute Mills Association was sealed during the last five years;

(b) what were the reasons for sealing;

(c) whether any percentage of loomage has been unsealed during the recent months; and

(d) whether there is any scheme to unseal all of them?

The Minister of Commerce (Shri Kanungo): (a) A statement is laid on the Table of the House.

STATEMENT

Year		Percentage of looms lying sealed
1955	. . .	12½
1956	1-1-56 to 8-1-56	12½
	9-1-56 to 19-2-56	10
	20-2-56 to 15-7-56	5
	16-7-56 to 16-9-56	7½
	17-9-56 to 31-12-56 .	12½
1957		12½
1958		12½
1959	1-1-59 to 1-3-59	12½
	2-3-59 to 21-6-59	14
	22-6-59 to 23-8-59 .	12½
	24-8-59 to 31-12-59 .	10
1960	1-1-60 to date .	10

(b) To adjust production according to the demand.

(c) 2½ per cent. of the loomage was unsealed with effect from the 24th August, 1959.

(d) While there is no specific scheme of unsealing, it is Government's constant endeavour to maintain production at the highest level possible consistent with the demand.

Shri S. C. Samanta: May I know whether as a measure of rationalisation some units were sealed because they were uneconomic?

Shri Kanungo: No, Sir, the sealing has no connection with rationalisation, the sealing is a periodical phenomenon which is going on from 1949 onwards. It depends upon the demand for exports—high or low—which provides the mills with work.

Shri S. C. Samanta: May I know whether during the last five years there was sealing because of labour trouble in that area?

Shri Kanungo: No, Sir.